उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः 1339 / एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉकः 09–01–2025

दिनांक : 9 जनवरी, 2025
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की बाईसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की बाईसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 09 जनवरी, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक व गेहूँ प्रजनक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; मत्स्य विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा; उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ; कृषि सांख्यिकी, उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (10 जनवरी, 2025 से 16 जनवरी, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (10 जनवरी से 16 जनवरी, 2025) के 11 एवं 12 जनवरी के दौरान प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, बुंदेलखण्ड क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में कुछ स्थानों पर जबकि भांभर तराई क्षेत्र में तथा 15 जनवरी को बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बादलों के आवागमन के साथ कहीं–कहीं मेघगर्जन के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त सप्ताह के अन्य दिनों में प्रदेश का मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है।

प्रदेश के विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान अधिकतम तापमान में उतार–चढ़ाव जारी रहने तथा 10 जनवरी तक आंशिक बढ़ोत्तरी होने व 11 एवं 12 जनवरी को आंशिक गिरावट के बाद पुनः आंशिक रूप से बढ़ोत्तरी होने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 16 से 18 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के मध्य भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग एवं दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के कुछ भाग एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। आगामी 12 जनवरी तक औसत न्यूनतम तापमान में 3 से 5 डिग्री सेल्सियस बढ़ोत्तरी होने तथा उसके बाद इसी परिमाण से औसत न्यूनतम तापमान में गिरावट आने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई, पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी-दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 05 से 08 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08 से 11 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में इस सप्ताह के आरंभिक चरण में घना कोहरा तथा उसके बाद के दिनों में हल्का/मध्यम कोहरा होने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (17 जनवरी से 23 जनवरी, 2025)

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग तथा मध्य-पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 04 से 06 डिग्री सेल्सियस तथा इन क्षेत्रों में तापमान 4 डिग्री या उससे कम होने पर पाला पड़ने की भी संभावना है; उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान 08 से 10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 06 से 08 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 7 जनवरी, 2025 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 135.87 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 136.53 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 100.49 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 101.12 लाख हे. के सापेक्ष 101.74 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.62 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.74 लाख हे. के सापेक्ष 1.77 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 101.67 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.58 लाख के सापेक्ष 0.30 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 51.17 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 7.28 लाख हे. के सापेक्ष 7.46 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 102.53 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 5.02 लाख हे. के सापेक्ष 4.92 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 98.02 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.98 लाख हे. के सापेक्ष 6.04 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.99 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.67 लाख हे. के सापेक्ष 4.68 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 100.14 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 13.47 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.62 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 101.14 प्रतिशत है। अलसी के 0.68 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.68 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 99.96 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- उत्तर प्रदेश के भांभर तराई व विंध्यन क्षेत्र में पाला पड़ने की आंशका है अतः बचाव हेतु हल्की सिंचाई करें।
- अगेती आलू व गन्ने की कटाई के बाद खेत खाली होने पर गेहूं की विलम्ब से बोई जाने वाली किस्मों की बुवाई कर सकते हैं।
- तिलहनी फसलों में माहूं का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- आलू में पछेती झुलसा के लिये मौसम अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- जायद में अगेती सब्जियों की खेती के लिये लो टनल अथवा पॉलीहाऊस में पौध तैयार करें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं में खुरपका-मुंहपका का प्रकोप अधिक होता है अतः टीकाकरण अवश्य करायें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की अति विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत किस्मों यथा एच.डी.-3271, एच.आई.1621, डब्लू.आर.-544, के.-7903 (हलना) एवं के.-9423 (उन्नत हलना) पी.बी.डब्लू.-833 आदि की बुवाई अतिशीघ्र तक कर दें।
- गेहूँ की फसल में नाइट्रोजन की शेष मात्रा को दो भागों में बाँटकर एक भाग प्रथम सिंचाई के बाद एवं दूसरे भाग को दूसरी सिंचाई के बाद जब खेत में पैर सधने लगे तब टॉप ड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की खड़ी फसल में यदि जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दे तो जिंक सल्फेट का प्रयोग खड़ी फसल में संस्तुत मात्रा के अनुसार करें।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत (33 ग्राम) + मेटासल्फ्यूरॉन मेथाइल 5 प्रतिशत डब्लू.जी. (20 ग्राम) अथवा फिनोक्साप्राप-पी इथाइल 10 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर प्रति हे.+मेटासल्फ्यूरान इथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. की 20 ग्राम प्रति हे. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से फ्लैटफैननॉजिल से प्रथम सिंचाई के बाद 30 से 35 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।
- तराई क्षेत्रों में इस समय गेरूई रोग के लक्षण दिखाई देने पर थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू. पी. की 700 ग्राम अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा मैंकोजेब 75 डब्लू. पी. की 2.0 किग्रा. मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 750 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अवस्था अनुकूल है अतः 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में रसायनिक नियंत्रण प्रभावी होता है। इसके बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी अथवा इमामेक्टिन बेनजोइट 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा थायोमेथाक्सॉम 2.6 प्रतिशत+लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों में पाले से बचाव हेतु हल्की सिंचाई करें।
- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई तुलसिता रोग के नियंत्रण हेतु मैकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की

2.0 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3.0 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये।

- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. अथवा डाईक्लोरोवॉस 76 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल., 250 मि.ली. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना खेत में यदि कटुआ कीट दिखाई दे रहे हों तो स्थान-स्थान पर बर्ड पर्चर लगायें तथा थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कई स्थानों पर घास-फूस रखें। प्रातःकाल फूस पर छिपे हुए कटुआ कीटों को इकट्ठा कर समाप्त करें।
- चना में उकठा का प्रकोप दिखाई देने पर ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा अधिक मात्रा में दिखाई देने पर 5 किग्रा. ट्राइकोडर्मा का 1000 लीटर पानी में घोल तैयार कर छिड़काव करें।
- मटर में फूल आने एवं दाना बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करें।
- मटर में फली छेदक/फली बेधक कीट के प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियां बनते समय 5 फरोमोन ट्रैप और 2 प्रकार प्रपंच प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।
- मटर में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 500-600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- मटर में बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 कि.ग्रा. अथवा ट्राईडेमेफॉन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर लगभग 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने की कटाई जमीन के बराबर से करें।
- गन्ने के साथ अंतफसली खेती की दशा में अंतःफसल की मांग के अनुसार सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई करें तथा अंतः फसल की कटाई/खुदाई के उपरांत फसल अवशेष यथाशीघ्र मृदा में मिला दें।
- शरदकाल में बोये गये गन्ने में हल्की सिंचाई कर गुड़ाई करें।
- जाड़े में काटे गन्ने की पेड़ी में अपेक्षाकृत कम फुटाव होता है। अच्छा फुटाव प्राप्त करने के लिये सिंचाई के उपरान्त ओट आने पर 10 टन/हे. ताजा प्रेसमड डालकर गुड़ाई करें। इनसे फुटाव अच्छा होगा।
- गन्ने में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2, 4-डी रसायन का 1.0 किग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हे. की दर से 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई के लिए खेत तैयार करें। संस्तुत प्रजाति के स्वस्थ बीज की आपूर्ति हेतु निकट स्थित गन्ना शोध केन्द्र अथवा चीनी मिल से सम्पर्क करें।

सब्जियों की खेती

- वर्तमान मौसम में आलू में पछेती झुलसा रोग प्रकोप होने की स्थिति में रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/रिडोमिल (0.1 प्रतिशत) फफूदनाशक 2.0 से 2.5 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में

घोलकर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है उनमें किसी भी फफूदनाशक साईमोक्सेनिल 8 प्रतिशत +मैंकोजेब अथवा मेटालेक्जिल + मैंकोजेब का 2.0 से 2.5 प्रति हे. (1000 लीटर पानी) की दर से 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

- आलू में एफिड (माहू) कीट की रोकथाम हेतु लैम्डासाइहैलोथ्रिल 2.5 प्रतिशत ई.सी. 1 मि.ली. प्रति ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में सहारा दें।
- टमाटर तथा मिर्च की फसल को पछेती झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली.) की दर से मैकोजेब अथवा रिडोमिल (1 ग्राम/ली.) तथा अर्ली झुलसा हेतु मैकोजेब (2 ग्राम/ली.) अथवा कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/ली.) का छिड़काव करें। फसलों को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- मिर्च, टमाटर फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है इसका फैलाव सफेद मक्खी/हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके फैलाव के रोकथाम हेतु डाईमेथोएट अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली. /लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- पुरानी अनुपादक बागों पर जीर्णोउद्धार अर्न्तगत विकारयुक्त एवं घनी शाखाओं का क्रंतन कार्य करें तथा क्रंतित भाग पर कॉपर आक्सीक्लोराइड का लेप लगायें।
- आम में यदि शाखाओं में डाईबैक रोग/गोंद निकलने की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास 200 से 400 ग्राम कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें तथा थायोफिनट मिथाइल 1 मि.ली. रसायन प्रति ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- केले में माहू की रोकथाम के लिये इमिडाक्लोप्रिड 2 मि.ली. रसायन को प्रति ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- आम/लीची में गुजिया कीट (मिलीबग) को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए भूमि से लगभग 40 से.मी. ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौड़ी पट्टी लपेट कर सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा. की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- अमरूद की फसल में उकठा रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव तथा 1 कि.ग्रा. ट्राईकोडर्मा को 70 से 80 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी हुई खाद में मिलाकर 1 से 2 कि. ग्रा. प्रति थाला की दर से मिट्टी में मिलायें।
- आंवलें की फसल में दीमक कीट से प्रभावित बाग में नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 2 से 5 ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोलकर तने के आस-पास की मिट्टी में मिला दें।

पशुपालन

- वर्तमान मौसम में खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है, अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक तथा गुड़ का घोल बनाकर खिलायें।

- उ.प्र. पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा द्वारा पशुओं को डूनिन ए.एस. खनिज मिश्रण तैयार किया गया है जिसको विश्वविद्यालय के निदेशक, शोध से 15 दिन पूर्व मांग पत्र भेजकर रू. 70 प्रति किलो दर से प्राप्त किया जा सकता है।
- विकासखण्ड स्तर/तहसील/जनपद स्तर पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय बहुउद्देश्यीय पशुचिकित्सा शिविरों को आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विशेषज्ञों की टीम द्वारा उपचार किया जा रहा है। इसका कृषक भाई नजदीकी पशु चिकित्सालय पर सम्पर्क कर लाभ ले सकते है।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- वर्तमान मौसम को देखते हुए पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह-शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बाँधें।
- पशुबाड़े में बिछावन के रूप में पुआल/गन्ने की सूखी पत्तियों का प्रयोग करें।
- मुर्गियों के बिछावन को सूखा रखें।

मत्स्य पालन

- वर्तमान में औसत तापमान लगभग 15 डिग्री सेलसियस है अतः यदि मछलियां पूरक आहार ग्रहण नहीं करती हैं तो पूरक आहार का प्रयोग बंद कर दें।
- वर्तमान मौसम में प्राकृतिक आहार की उपलब्धता तालाब में बनाने हेतु प्रति एकड़ प्रत्येक 10 से 15 दिनों के अंतराल पर 15 कि.ग्रा. चूना, 15 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 5 कि.ग्रा. मिनरल मिक्सचर एवं 50 कि.ग्रा. सरसों या राई की खली (पानी में फुलाकर) घोलकर तालाब में छिड़काव करना चाहिये।
- मत्स्य बीज उत्पादक कॉमन कार्प की ब्रीडिंग जनवरी के अंतिम सप्ताह या फरवरी माह से प्रारंभ कराने के लिये 15 से 20 दिन पूर्व नर एवं मादा कॉमन कार्प के प्रजनक मछली (ब्रूड) को दो अलग-अलग तालाबों में संचयन कर लें।
- प्रजनक मछली (ब्रूड) ऑरगुल्स के संक्रमण से बचाने हेतु आवश्यकता अनुसार 80 से 100 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से बुटॉक्स या क्लीनर या टिनिक्स का छिड़काव दिन में 10 बजे पूर्वाह्न से 2 बजे अपराह्न के बीच करें।
- वर्तमान मौसम में मछलियों को पैरासाइटिक संक्रमण एवं फफूंद से होने वाले संक्रमण से बचाव हेतु 40 से 50 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नमक का घोल बनाकर छिड़काव करें या वी.के.सी. दवा 01 लीटर प्रति एकड़ की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- वर्तमान मौसम में कार्प मछली वाले तालाब में पानी का स्तर 5 से 6 फीट एवं पंगेशियस मछली वाले तालाब में पानी का स्तर न्यूनतम 8 से 10 फीट बनाये रखें। पंगेशियस के तालाबों में प्रतिदिन 10 से 20 प्रतिशत तक पानी का बदलाव ट्यूबवेल के पानी से करें।

रेशम पालन

- शहतूत वृक्षारोपण की प्रूनिंग अथवा टिमिंग का कार्य पूर्ण होने के उपरांत शहतूत बागानों से खरपतवार एवं घास आदि की सफाई समय से करा ली जाय तथा विभाजित खुराक के रूप में उर्वरक का प्रयोग करते हुये तुरंत सिंचाई करना चाहिये साथ ही नर्सरी लगाने की कार्यवाही शीघ्र ही पूर्ण कर ली जाय।

वानिकी

- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें अन्यथा कोहरे से नुकसान होगा।
- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 23 जनवरी, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट **upcar.up.gov.in** पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट **www.kisanmitraup.ai** पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल **upcar12@gmail.com** पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह) 9/01/25
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।

17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

9-1-25

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की बाईसवीं बैठक दिनांक 09 जनवरी, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. डा. संजय श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उ.प्र.।
6. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
7. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
8. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
10. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
11. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
12. डा. बी.पी. सिंह, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ।
13. श्री गिरीश त्रिपाठी, सहायक निदेशक मत्स्य, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
17. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
18. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ (ऑनलाइन)।